MAHARASHTRA

Prakash Vitthal Dhanawade
Zilla Prishad School Jwali, Ekiv School
Satara, Maharashtra
Email id: zpschoolekiv@gmail.com, prakashdhanawade1967@gmail.com

Abstract

This school is located in a hilly area which is beautiful in ambience. It is a small school whose building was transformed by the school head and his team. This school pioneered creating networks with community and local donors. Everything was developed from scratch - new building, new infrastructure including computer and printer, digital maps, charts etc. It was possible only through strong school-community relations. However, increasing the enrolment still persisted as a challenge. For this, active support of the community was garnered through door-to-door campaigns, awareness rallies and making parents aware of the value of education. The school head and his team have initiated many interesting courses and encouraged involvement of students co-curricular activities for improving retention and participation in school. These initiatives have translated in cent percent attendance.

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा एकीव, महाराष्ट्र के शिवकालीन इतिहास प्रसिध्द जावली घाटी में पहाडी इलाके मे बनी झाडियो के बीच बसी है| जगविख्यात कासपुष्प पठार पर एकीव ग्राम बसा है| उसी गाँव की यह पाठशाला है| अत्यंत मनोहारी निसर्ग में सातारा शहर से शुरु हुआ २४ कि.मी. का पहाडी रास्ता पार करने के बाद हम पाठशाला में पहुँचते है| अत्यंत दुर्गम इलाका होने के बावजूद पाठशाला में पहॅुचने के बाद सारी थकान दूर हो जाती है |

पाठशाला में कुल २६ छात्र पहली कक्षा से आठवी कक्षा तक पढ रहे है और ४ अध्यापक कार्यरत है| पाठशाला का युडायस नंबर २७३१०१०६३०१ और email I.D. zpschoolekiv@gmail.com है | पाठशाला का निर्माण ३१ मार्च १९५७ में हुआ | शुरुआती दौर में पाठशाला में पहली कक्षा से चौथी कक्षा तक ही वर्ग थे | बहुत सालो तक गाँव कें मंदिर से पाठशाला का कामकाज चलता रहा | उसके बाद शासनद्वारा पाठशाला को एक कमरा उपलब्ध कराया गया | लोगों के मन मे शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न हुई | गाँव के लोगों ने उस कमरे के लिए मुफ्त में जमीन उपलब्ध की और खुद मेहनत कर और दोन कमरे पाठशाला के लिए उपलब्ध करवा दिए | आगे इ.स. २०१४ में आठवी कक्षा तक पाठशाला का विस्तार हुआ |

चुनौतियाँ के समाधान की योजना

१ जुलाई २०१४ में इस पाठशाला में मेरा तबादला हुआ | मेरे साथ मेरे और दोन साथी भी यहाँ पर तबादले से नियुक्त हुए | बारिश के दिन थे | विद्यालय के इमारत की अवस्था बहुत ही दयनीय थी | छत से पानी टपक रहा था, किसी भी कमरे में फर्श नही थी | खेलने के लिए मैदान या ना ही बाग बगीचा | स्वच्छतागृह भी खराब था | विद्यालय की दिवारें भी रुखी सुखी बिना रंग की | भौतिक सुविधाओं की न्यूनता ! ऐसे में मैने मेरे सहकर्मियों के साथ इस स्थिती को बदलने की ठान ली | हमने

पाठशाला के विकास का प्राधान्यक्रम तैयार किया | उसके लिए पाठशाला के कार्यालयीन समय के बाद काम करना शुरु किया | गाँव के लोग तथा स्कूल प्रभंधन (मॅनेजमेंट) कमिटी के सदस्यों के साथ बातचीत की | बारिश खत्म होते ही मैदान के निर्माण का कार्य शुरु किया |

खेल का मेदान बहुत ही छोटा था, और पाठशाला पहाड पर होने के कारण मैदान में बहुत बडे-बडे पत्थर थे | गाँव के लोगों की सहायता से ज सी बी मशीन द्वारा मैदान समतल किया गया, बडे-बडे पत्थर हटाए गए | हटाए गये पत्थरों का पुन: निर्माण कार्य में इस्तेमाल करके पाठशाला की सुरक्षा के लिए गाँव के सभी पुरुष, महिला, युवाओं ने मेहनत कर के ५० मीटर की दीवार दो दिन में खडी की |

पाठशाला की नादुरुस्त पानी की टंकी, दुरुस्त की गई गाववालों ने पाइपलाईन की पूर्ति की और पाठशाला में २४ x 7 पानी उपलब्ध हुआ | स्वच्छतागृह की मरम्मत की गई और शौचालयों मे पानी की सुविधा निर्माण की गई | हाथ धोने के लिए आकर्षक हँडवॉश स्टेशन का निर्माण किया गया | छात्र और उनके माता- पिता की सहायता से बगीचा और किचन गार्डन तैयार हुआ | इन सभी कार्यों मे एकीव के ग्रामवासी, एकीव के वन कमिटी के सदस्य तथा मुंबई स्थित एकीव के ग्रामवासियों ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया | इन सभी की सहायता से विद्यालय भवन का आकर्षक रंगकाम किया गया |

शिक्षाप्रेमी दानशूर लोगों की सहायता से पाठशाला के बरामदें मे आधुनिक पध्दती से डिजिटल चार्टस् नक्शे, महनीय व्यक्तीओं की तस्वीरे आदि लगाकर आकर्षक बरामदा तैयार किया गया |

मुंबई स्थित ग्रामवासियों ने कम्प्युटर, प्रिंटर दिया | एक सामाजिक संस्था ने और एक कॅम्पयुटर दिया | जिला परिषद द्वारा पाठशाला में एल.सी.डी. प्रोजेक्टर प्राप्त किया गया | इन सभी उपकरणों की सहायता से पाठशाला में E- learning शुरु हुआ | गाँव के दानशूर व्यक्ती ने एक LED TV (42") और बाकी के लोगों ने और एक T.V. पाठशाला में उपलब्ध किया | किसी नें स्कूल युनिफॉर्म तो किसी ने Sports Dress उपलब्ध कराया | गाँव के एक महनीय स्वर्गवारी व्यक्ती के स्मृती मे उनके रिश्तेदारों ने १.५ लाख रु. खर्च कर पाठशाला के प्रवेश् व्दार का निर्माण किया |

छात्रों का अनुभव विश्व समृद्ध होने के लिए ऐतिहासिक तथा अन्य स्थलों की सैर करना जरुरी था, लेकिन छात्रों के माता-पिता इतना खर्चा नही उठा सकते थे | ऐसे में मुंबई स्थित ग्रामवासियों ने सैर के खर्चे की जिम्मेदारी ली |

ग्रामीण तथा पहाडी इलाकें के छात्रों की शिक्षा अच्छी तरह से हो तथा इन छात्रों के गरीब माता-पिताओं को इनका खर्चा ना उठाना पडे इसलिए यहाँ के अनेक सामाजिक संस्थाओं ने तथा युवाओं के संगठनों ने छात्रों के लिए मुफ्त में लेखन साहित्य, कापियाँ, स्कूल बॅग आदि जरुरी चीजे उपलब्ध करवाई | यहाँ बहुत ठंड होती है, यह देखकर और पाठशाला के छात्रों का पढाई का दर्जा देखकर एक सामाजिक संस्था नें छात्रो कों मुफ्त स्वेटर बाँटकर माँ की ममता का एहसास दिया |

भौतिक सुविधाओं की पूर्ति के हेतू लोंगो ने पाठशाला में डायस, प्रिंटर, पेपर स्टँड आदि चीजे उपलब्ध करा दी | इतना ही नही, छात्रों की खेलों में प्रगति देखकर स्पोर्टस कीट भी उपलब्ध करवाएँ | पाठशाला के ग्रंथालय के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तके उपलब्ध करवा दी |

यह सब देखकर मेरे सह-अध्यापकों ने अध्ययन प्रक्रिया आनंददायी हो इसलिए खुद विभिन्न नक्शे, चार्टस चित्र, प्रतिकृतियाँ तथा ज्ञान रचनावादी अध्ययन साहित्य का निर्माण किया | इन सब चीजों के परिणामस्वरुप छात्रोंकी अध्ययन में रुचि बढ गई |

आज चार साल बाद पाठशाला की पूर्वस्थिती में पूरा बदलाव आया | छात्रों की स्वच्छता, उनका बर्ताव तथा पढाई की गति में क्रांति सी हो गई | इस बदलाव में मेरे सभी सह-अध्यापक, छात्र तथा उनके पेरेंटस का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है | इसकें परिणामस्वरुप आज मेरी पाठशाला सभी क्षेत्रों में बहुत सारे सम्मानों की हकदार बन गई है |

चार साल पहले हम जब पाठशाला में आए तब छात्रों की उपस्थिती का प्रमाण बहुत ही कम था | परिणामस्वरुप छात्रों की गुणवत्ता भी कम थी | इसलिए पहला लक्ष्य था- छात्रों की उपस्थिती बढाना | इस पर कार्य करते समय कुछ चीजें सामने आई | बीहड इलाका, घर से पाठशाला तक का अंतर, अध्यापकों और समाज का कम संपर्क, घर के कामों मे हाथ बँटाना, खेतो के काम तथा अंधविश्वास और अज्ञान के

कारण छात्रों के उपस्थिती का प्रमाण कम था | उपस्थिती बढाने के लिए अध्यापकों ने पेरेंटस की भेंट लेकर जागृति की | पेरेंटस मीट, जैसे उपक्रमो का आयोजन किया | पेरेंटस का उद्‌बोधन किया गया | इसके परिणामस्वरुप अध्यापक और पेरेंटस में मित्रता के संबंध स्थापित हुए | अध्यापकों के प्रयास देखकर ग्रामवासियों में अध्यापकों के प्रति आदरभाव उत्पन्न हुआ | पेरेंटस छात्रोंको हररोज पाठशाला में भेजने लगे | कुछ छात्रों के मन में पाठशाला के प्रति मन में डर था | उनकें लिए अध्यापकों ने कई उपक्रमों का अध्ययन प्रक्रिया मे समाविष्ट कर अध्ययन प्रक्रिया सुखद हो इसलिए प्रयास किया | मनोरंजक खेल, गाने, कहानियॉ, गप्पे इनके अलावा झाँज, लेजिम, कवायद आदि उपक्रमों का समावेश किया गया | इसके परिणामस्वरुप छात्रों के मन का डर दूर हुआ और जिनको पढाई में रुचि नही थी वे भी छात्र नियमितरुप से पाठशाला में आने लगे | इसके अलावा संगीतमय परिपाठ, उपस्थिती ध्वज, आज का आदर्श छात्र आदि उपक्रमों के कारण उपस्थिती शत प्रतिशत हो गई |

सब छात्र पाठशाला में आने लगे| दिनभर पाठशाला में उनका जी बहलने लगा | पाठशाला का आनंददायी वातावरण उनकों पसंद आने लगा | और फिर उनको पढाई भी अच्छी लगने लगी | हर एक बच्चा पाठशाला में आना चाहिए, पाठशाला में उसे बना रहना चाहिए और सीखना चाहिए | इसी दौरान यह बात समझ् में आई की, कुछ बच्चों की पढाई में गति कम थी | उनके लिए कुछ विशेष प्रयासों की जरुरत थी|

ऐसे छात्रों के लिए विशेष मार्गदर्शन, ज्ञान रचनावाद, शैक्षणिक संसाधनों का उपयोग, ग्रंथलय, प्रयोगशाला का उपयोग किया गया | ज्ञान रचनावादी संसाधनों को छात्र उपयोग में लाने लगे और इन छात्रों की पढाई में गति बढने लगी | इसके परिणामस्वरुप सभी परीक्षाओं में सभी छात्र प्रगत होने लगे | भिन्न बौद्धिक स्तर के अनुसार छात्रों के गट बनाए गए | गट में सहाध्यायी अध्ययन शुरु हुआ | पढाई में पीछे रहनेवाले छात्र भी बडी चाव से स्वयं पढने लगे | निर्वर्ग अध्यापन पद्धती उपयोग में लाई गई | छात्रों में ज्ञान का संक्रमण होने लगा | पहली, दुसरी कक्षा के छात्र तिसरी , चौथी कथा तक की पढाई करने लगे | पढाई में पीछे रहनेवाले छात्रों की गति बढकर वे अन्य छात्रों के स्तर तक पहुँच गए | अब जरुरत थी प्रज्ञावान छात्रों के लिए कुछ खास करने की | ऐसे छात्रों के लिए प्रश्न निर्मिती उपक्रम शुरु किया | छात्रों ने खुद प्रश्न निर्माण किए, परिणामस्वरुप छात्रों को संपूर्ण ज्ञान प्राप्त होने लगा |

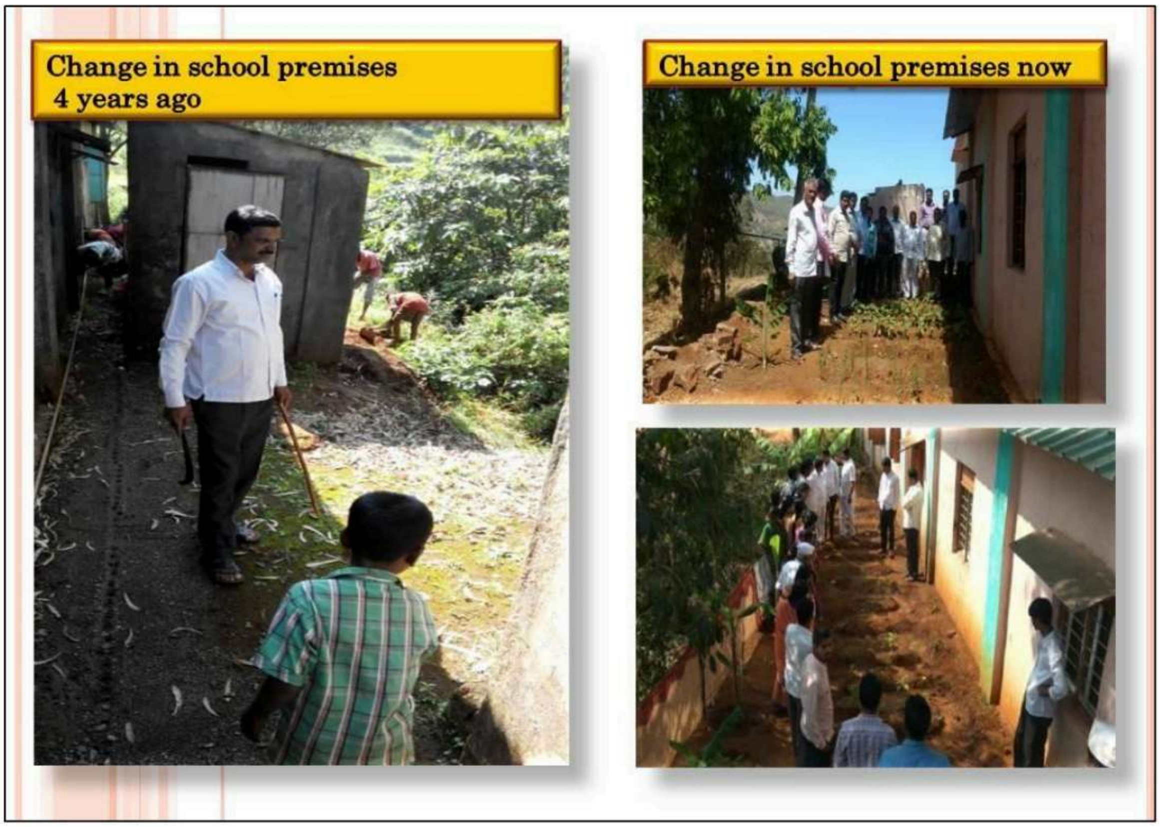

छात्रों कें मन में पाठशाला के प्रति जो लगाव पैदा हुआ उसका महत्वपूर्ण कारण था ज्ञानरचनावाद | प्रचलित अध्यापन तंत्र छोडकर अलग तंत्र है यह | ज्ञानरचनावाद याने कृतियुक्त अध्ययन, स्वयं छात्र द्वारा ज्ञान की रचना | अध्यापक को सिर्फ सहायक की भूमिका | उसके लिए कक्षानुसार शैक्षणिक संसाधनों की निर्मिती करना जरुरी था | विभिन्न प्रशिक्षण तथा रिसोर्स पर्सन (Resource Person)

द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन के कारण संसाधन बनाने का रास्ता आसान हुआ | छात्रों की मदद और अध्यापकों के परिश्रम से विपुल मात्रा में अध्ययन साधनों का निर्माण हुआ | खुद छात्र और अध्यापकों द्वारा निर्मित साहित्य होने के कारण उसका उपयोग भी नियमित रुप से लेकिन सावधानी से होने लगा | इन सब प्रयासों के कारण छात्रों की अध्ययन प्रक्रिया फलदायी होने लगी |

अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया सुखद होने के कारण छात्रों का बौद्धिक स्तर बढने लगा | अब छात्रो कों विभिन्न प्रतियोगिताएँ तथा स्कॉलरशिप परीक्षा का अनुभव देना जरुरी था | महाराष्ट्र मे पाँचवी और आठवी कक्षा के छात्रों के लिए इन परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है | छात्रों को इसके लिए प्रोत्साहित किया गया और पाँचवी और आठवी कक्षा के सभी छात्र इसमें शामील हुए | पाठशाला में अतिरिक्त तासिका लेकर छात्रों को मार्गदर्शन किया गया | दीर्घ छुट्टीओं में भी मार्गदर्शन किया गया | विभीन्न रिसोर्स पर्सन के मार्गदर्शन का आयोजन किया गया | विपुल मात्रा में प्रश्न-पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर उनका अभ्यास दिया | अत: २०१८ के शिष्यवृत्ती परीक्षा में एक छात्र नें छात्रवृत्ति प्राप्त की, सभी छात्र उत्तीर्ण हुए | इस प्रेरणा के कारण अब पहली कक्षा से ही इन परीक्षाओं की तैयारी की जाती है | आगे भी सभी प्रतियोगिताओं मे छात्र निश्चित ही यश की प्राप्ति करेंगे | इसके अलावा NMMS (राष्ट्रीय आर्थिक दुर्बल घटक छात्रवृत्ति) परीक्षा की भी तैयारी की जाती है | इस साल आठवी कक्षा के सभी छात्रों ने परीक्षा दी है | उसमें भी छात्र निश्चित यश प्राप्त करेंगें |

पहाडी क्षेत्र में अत्यंत कठिन परिस्थितीओं में ३-४ कि.मी. का पहाड पैदल उतारकर पाठशाला में आनेवाले छात्रों के शारीरिक क्षमताओं का उपयोग खेल (क्रीडा) में करने की सोच मन में आई | Healthy mind resides in healty body (निरोगी शरीर में निरोगी मन वास करता है) | इसलिए छात्रों को खेलो का प्रशिक्षण देने की जरुरत थी | छात्रों के सुप्त शक्तिओं के अनुसार १०० मी., २०० मी. ४०० मी. रनिंग, रिले आदि खेलों के लिए छात्र चुने गए | नियमित अभ्यास और मार्गदर्शन के कारण दौड प्रतियोगिता में गत ३ सालों में छात्रों ने जिला लेवल तक यश प्राप्त किया | इसके अलावा जावली मॅरेथॉन, सातारा मॅरेथॉन मे १० कि.मी. की प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त कर पाठशाला का नाम रोशन किया | रिले और लुगडी में भी जिला स्तर पर पहला स्थान प्राप्त हुआ |

बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक स्वास्थ का भी महत्व होता है | शारीरिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न करसतें, कवायत, संचलन, संगीत कवायत, लेजिम, योगा, एरोबिक्स आदि उपक्रमोंद्वारा शारीरिक स्वास्थ्य बढाने का प्रयास किया जाता है | छात्रोंको आनंद मिलता है और शारीरिक विकास के लिए यह सब मददगार होता है |

झाँज, लेजिम के लिए विभिन्न वाद्यों का छात्र प्रयोग करते है | परिपाठ के वक्त भी छात्र वाद्यों का प्रयोग करते है | अध्यापकों के मार्गदर्शन में पाठशाला का वादयवृंद भी तैयार हुआ |

महाराष्ट्र शासन व्दारा प्रायोजित विभिन्न उपक्रमों में भी पाठशाला हिस्सा लेती है | Tobacco- Free School उपक्रम में हिस्सा लेकर पाठशाला १००प्रतिशत तमाखू मुक्त हो गई | भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान में भी पाठशाला ने जोर शोर से सहभाग लेकर पाठशाला स्वच्छ और सुंदर की |

कास पुष्प पठार देखने के लिए यहाँ पर देश- विदेश से पर्यटक आते रहते है | ये सभी छात्री हमारी पाठशाला देखकर यहाँ रुक जाते है | स्वच्छ, सुंदर पाठशाला, गुलाब का बगीचा, विभिन्न रंगो के फूलों का बगीचा देखने वालों को मोहित करता है | किचन गार्डन में छात्रो कों सेंद्रीय खेती के अनुभव दिए जाते है | जय जवान जय किसान की उद्घोषणा को मूर्त रुप देने के हेतू अच्छा किसान बनने की तैयारी पाठशाला में की जाती है | किचन गार्डन से मध्यान्ह भोजन के लिए विभिन्न सब्जियाँ प्राप्त होती है | केले पूरक आहार के रुप में दिए जाते है | खुद मेहनत करके उत्पादित विभिन्न फल तथा सब्जियों से छात्रों को स्वनिर्मिती का आनंद मिलता है साथ साथ पेड, पौधों का प्राणी, पक्षियों का निरीक्षण करते हुए छात्रों को अध्ययन अनुभव भी मिलते है |

अपनी गुणवत्ता तथा विभिन्न मानकों की पूर्ति कर पाठशाला को अप्रेल २०१७ मे ISO दर्जा प्राप्त हुआ | जगविख्यात कास पुष्पपठार का ही एकीव ग्राम एक हिस्सा है | निसर्ग का अपार भांडार यहाँ उपलब्ध है | यहाँ की वृक्षसंपदा की रक्षा करना तथा संवर्धन करना पाठशाला की भी जिम्मेदारी थी | इसलिए वृक्षारोपण तथा वृक्षसंवर्धन के कार्य में भी सभी छात्र और अध्यापक तन, मन, धन से जिम्मेदारी लेते है | खुद लगाए गए पेड, पौधों की छात्र प्यार से निगरानी करते है | पाठशाला के प्रांगण में गुलमोहर, बरगद, अगुरु, आम, जामून आदि पेड बडी शान से मेहमानों की आवभगत कर रहे है | इस तरह पेड पौधों की रक्षा करना तथा संवर्धन करने की सीख छात्रोंको आप मिल रही है |

भविष्यकालीन योजनाएँ

छात्रों को संगणक शिक्षा (Computer educatio of students): आज संगणक का युग है | सभी क्षेत्रों मे संगणक का प्रयोग अनिवार्य है | आंतरजाल की सहायता से जानकारी तथा ज्ञान का आदान-प्रदान एक सुलभ प्रक्रिया हो गई है | भविष्य मे संगणक साक्षर मनुष्य ही साक्षर कहलाया जाएगा | शिक्षा के क्षेत्र में भी अध्ययन-अध्यापन क्षेत्र इसे अपवाद नही रहा | जीवन में घडी-घडी संगणक से संबंध आता है | इसलिए शिक्षा कें क्षेत्र में अगर कल्पकता से संगणक का प्रयोग किया जाए तो क्रांति हो जाएगी | यह सब देखते हुए हमारी पाठशाला में संगणक शिक्षा दी जाती है |

जिल्हा परिषद द्वारा प्राप्त एक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त दो संगणक पाठशाला में उपलब्ध है | उसके द्वारा संगणक शिक्षा दी जा रही है | लेकिन पाठशाला में उपलब्ध संगणकों की संख्या कम होने के कारण सभी छात्र इसका पूरी तरह से लाभ नही ले सकते | इसलिए शासन तथा विभिन्न सामाजिक

संस्थाओं द्वारा और दानशूर व्यक्तियों की सहायता से ज्यदा संख्या में संगणक उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य है |

टॅब्लेट का उपयोग (Use of Tablet): शिक्षा में उपयोगी साबित हुए और एक साधन का नाम है टॅब्लेट हमारी पाठशाला में इस वक्त एक भी टॅब्लेट उपलब्ध नही है | महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित किताबों मे Q.R. Code दिए गए है | उनका स्कॅनिंग करते ही पाठ्यक्रम से संबंधित व्हिडीओ, ऑडिओ, चित्र तथा स्वाध्याय देखने को मिलते है | इसकी सहायता से अध्ययन सुलभ और परिणामकारक हो जाता है | आजकल बस्ते बोझ भी चर्चा का विषय है | यह बोझ करने के लिए टॅब्लेट एक प्रभावी साधन हो सकता है |

टॅब्लेट की बहुत सारी विशेषताएँ होती है | जैसे की

1. Tablet आकार में छोटा और ले जाने के हिसाब से सुलभ होता है |
2. Tablet में हस्ताक्षर स्कॅन करके उसकी soft copy बना सकते है |
3. सभी संपादित फाईल्स आवश्यक हो तब उपलब्ध होती है |
4. फोटोज, नक्शे, चित्र, विभिन्न आकृतियाँ हम इसमें संचित कर सकते है |
5. इसमें वेब कॅमेरा होने के कारण टेलिकॉन्फरन्स की सुविधा उपलब्ध होती है |
6. गणिती गणना के लिए सहायक होता है |
7. बौध्दिक स्तर बढाने के लिए बहुत सारे गेम्स (खेल) होते है |
8. आंतरजाल की सुविधा उपलब्ध होती है |

   हमारी पाठशाला में ४ अध्यापक ८ कक्षाओं को पढा रहे है |

अगर टॅब्लेटस उपलब्ध हुए तो अध्यापकों का कार्य हल्का हो सकता है | प्ले स्टोअर पर उपलब्ध विभिन्न ॲपस (Apps) व्दारा अध्ययन हो सकता है | इसलिए टॅब्लेटस उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य है |

राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी तैयार करना : जैसे की पहले उल्लेख हुआ है, पहाडी क्षेत्र में रहनेवाले यहाँ के चप्पल और मजबूत छात्रों के अंगभूत कौशलों का उपयोग करके हमें ऐसे खिलाडी तैयार करने है, जो राष्ट्रीय स्तर पर खेल सके |

क्रीडा प्रबोधिनी में प्रवेश पात्र होने के लिए हमारे छात्र जोर- शोर से मेहनत कर रहे है | लेकिन हम इसमें अभी तक सफल नही हो सके | इसके कुछ कारण सामने आए | जैसे की -

1. सही मैदान की अनुपलब्धता |
2. उचित स्पोर्टस इक्विपमेंट की अनुपलबधता | जैसे की स्पाईक्स शूज वगैरे
3. पेरेंटस का रुखा बर्ताब |
4. संतुलित आहार की कमी |

इन सभी कमियों से बाहर आने का निश्चय हमने किया है |

पेरेंटस् और समाज की सहायता लेकर ये कमियाँ दूर करने का प्रयास हो रहा है | इसके अलावा नियमित अभ्यास, क्रीडा प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन आदि उपक्रमों की सहायता से एक दिन हमारे छात्रों को राष्ट्रीय स्तर की क्रीडा प्रतियोगिताओ में उतारने का हमारा सपना निश्चित पूरा होगा |

समृद्ध ग्रंथालय : स्कूली शिक्षा में छात्रों का बौध्दिक तथा गुणात्मक दर्जा सुधारने के लिए ग्रंथालय का महत्वपूर्ण योगदान होता है | ग्रंथालय का अधिक मात्रा में उपयोग होना जरुरी है | केवल किताबों द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान से शिक्षा का उददेश सफील नही हो सकता | इसलिए छात्रों में अवांतर वाचन के प्रति रुचि जगाना जरुरी है | पढने के लिए पुस्तकों का भांडार उपलब्ध होना चाहिए | इसके कारण छात्रों मे ज्ञान प्राप्ति के प्रति रुचि पैदा होगी |

हमारी पाठशाला, ग्रामीण, पहाडी इलाकें मे होने के कारण छात्रों का सामान्य ज्ञान कम है | यह जनरल नॉलेज बढाने के लिए विभिन्न विषयाधारित कमसे कम १००० पुस्तके आने वाले समय में उपलब्ध कराने का मानस है | इसके लिए दानशूर लोग, पेरेंटस, सामाजिक संस्था, युवा संगठन आदि की सहायता लेने का हम प्रयास कर रहे है | ग्रामीण इलाके के छात्रो को स्पर्धा के युग में स्वावलंबी बनाने की कोशिश हम कर रहे है |

पाठशाला का विकास करने के लिए निर्धारित उददेश् प्राप्त करने के लिए हम अध्यापक जी-जान से मेहनत करेंगे | इसमें हम सफल होंगे इसका हमें ठाम विश्वास है |